A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

कलकत्ते के नामी डाक्टर एस० के० बर्म्मन का

बच्चों के लिये—

"लाल शरबत"

माँ !

देना मीठा मीठा "लाल शरबत"

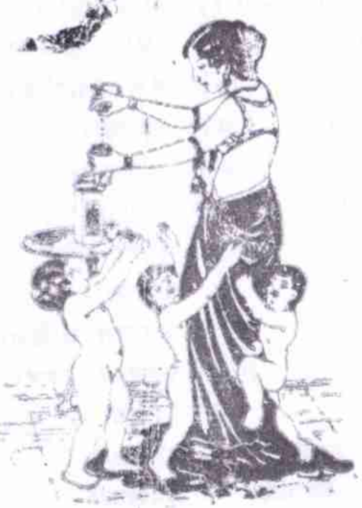

बच्चों का बल बढ़ाने में विख्यात है।

—०—

छोटे बच्चों का बलो न बनाना हो तो एक बार इसे पिला कर आजमाइश कीजिये।

मीठा होने के कारण लड़के इसे बड़े चाव से पीते हैं।

—०—

बच्चों का बल बढ़ाने में इसके समान दूसरी दवाई नहीं है। यह अमृत के समान शीघ्र गुण करने वाला मोदक है।

मूल्य फी शीशी १) एक रु० । डा०म० ।=) छ आने।

डाक्टर एस० के० बर्म्मन,

पोष्टबक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

एजेण्ट—इलाहाबाद (चौक) में हमारी दवाइयाँ दुबे ब्रादर्स के पास मिलती हैं।

१९२६] [चतुर्थ अङ्क

शिशु

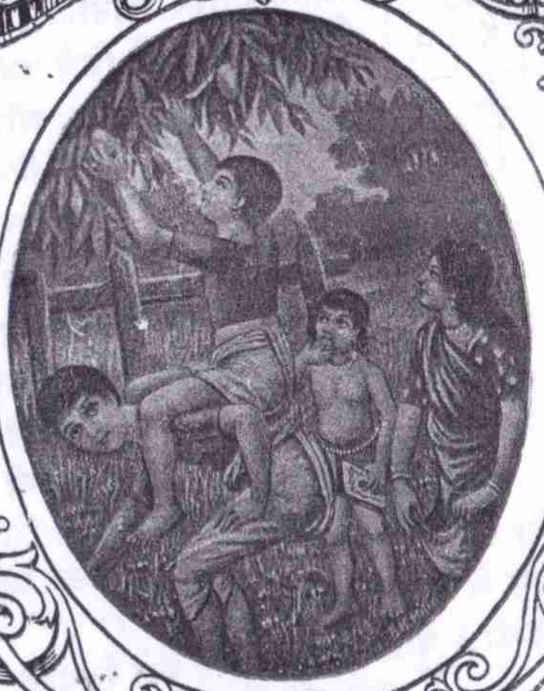

वार्षिक मूल्य २)] [इस अङ्क का ≈)

सम्पादक

पण्डित सुदर्शनाचार्य बी० ए०

सहायक सम्पादक—श्रीनाथसिंह

विषय-सूची

अप्रेल सन् १६२६

(१) शिशु-विनय (पद्य)—[ले०, श्री० 'श्रीश'] ...
(२) भीम का त्याग–[ले०,श्री० ज़हूरबख्श 'हिन्दीकोविद]
(३) भालु महाराज ... ...
(४) क्या होगा ? (पद्य)—[ले०, श्री० गपोड़ाचार्य्य
(५) छाया का खेल ... ...
(६) दोनों भाई ... ...
(७) चिड़ीमार और बौना [ले०, श्री० गोपाल देवी]
(८) भाई की याद (पद्य)—[ले०, श्री० 'स्वर्ण सहा-
दर'] १
(९) किताब का जादू—[ले०, श्री० सत्य जीवनशर्म्मा] १
(१०) एक बेवकूफ लड़का (पद्य) [ले०, श्री० लक्ष्मी
कान्त वर्मा] १
(११) सहारा का रेगिस्तान—[ले०, श्री० बुद्धिसागर
वर्मा विशारद, बी० ए०] १८
(१२) उपदेश (पद्य)—[ले०, श्री० श्रीनृसिंह पाठक
'अमर'] १८
(१३) चलना सीखो १८
(१४) हम तकिया क्यों लगाते हैं ?—[ले०, श्री० रामसिंह
बी० एस सी०] १८
(१५) मेरी फुलवारी (पद्य)—[ले०, श्री० विश्व प्रकाश
विशारद] १९०
(१६) चिट्ठी-चपाती १९२
(१७) अनोखी बातें १९४
(१८) चुटकुले १९७
(१९) नई पहेली १९९

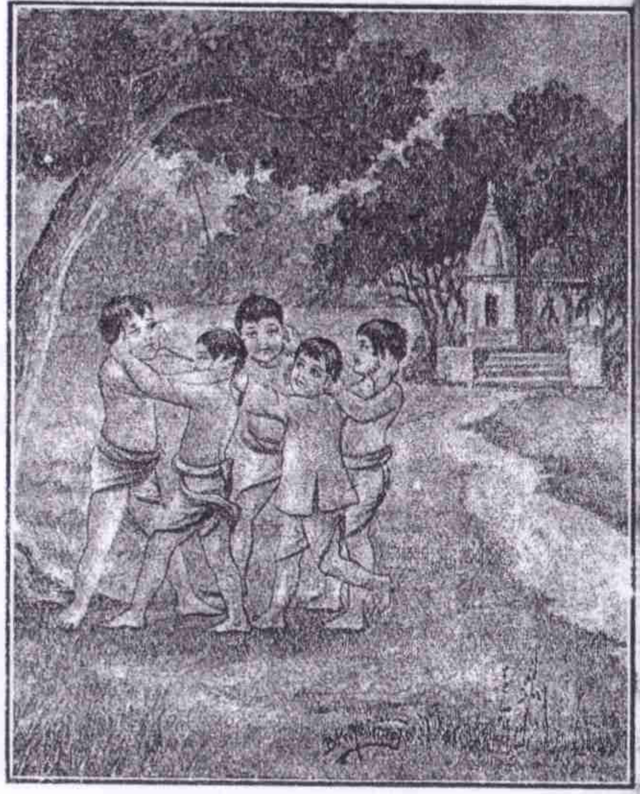

यह क्या खेल रहे हो भाई।
कानों की तो आफत आई॥

शिशु

बढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान॥
तुम हीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत महतारी॥

एकादश वर्ष } प्रयाग, अप्रैल, १९२६ { चतुर्थ अङ्क

शिशु-विनय

परम पिता हो तुम परमेश्वर परम पुत्र मैं बनूँ तुम्हारा।
दीनबन्धु कहलाते हो तुम मैं दीनों का बनूँ सहारा॥
तुम हो सारे जग के मालिक मैं समझूँ अपना जग सारा।
तुम हो नाथ दया के सागर मैं भी बनूँ दया की धारा॥
विनय यही है इसी भाव से झुका तुम्हें हो शीश हमारा।
तुम अनन्त आकाश बनो तो मैं भी चमकूँ बन कर तारा॥

—'शीश'।

भीम का त्याग

राजपूताने में मेवाड़ नाम का एक राज्य है। पहले तो उसकी राजधानी चित्तौर थी पर आज कल उदयपुर है। अब यह राज्य भी उदयपुर के नाम से ही प्रसिद्ध है। बहुत पहले वहाँ राणा राजसिंह राज करता था। उसके भीमसिंह और जयसिंह नाम के दो लड़के थे। ये लड़के एक साथ—जोड़वाँ पैदा हुए थे। भीमसिंह पहले हुआ था, जयसिंह पीछे।

राजगद्दी बहुधा बड़े लड़के को दी जाती है। भीम बड़ा था, इसलिये नियम के अनुसार गद्दी का अधिकारी भी वही था। लोग भी यही समझते थे। परन्तु राणा जयसिंह को अधिक चाहता और उसे ही गद्दी देने का भी विचार रखता था। एक दिन महारानी को राणा का विचार मालूम हो गया। बेचारी बड़ी चिन्ता में पड़ गई। लड़के तो उसी के थे, वह दोनों को ही चाहती थी, पर यह भी चाहती थी, कि बड़े बेटे

का अधिकार न मारा जावे। एक दिन मौका पाकर उसने राणा से विनती की—"महाराज! आप जयसिंह को राज्य का अधिकारी बनाने का विचार कर रहे हैं, यह ठीक नहीं है। यह तो भीमसिंह के साथ बिलकुल अन्याय करना है। भीम बड़ा है, राज्य का अधिकारी भी वही है। हमारे पूर्वजों से भी यही नियम चला आया है। बड़ा बेटा ही राज्य का अधिकारी होता है। इसलिये गद्दी भीम को ही मिलनी चाहिये।"

राणा ने महारानी की बात मान ली। उसने अपना विचार बदल दिया। उसने दूसरे दिन भीम को अपने पास बुलाया। भीम को पिता का इरादा मालूम था। वह गुस्से में भरा हुआ पिता के पास आया। भीम ने आकर देखा कि पिता का चेहरा उतर गया है। उस पर चिन्ता छा रही है, और वह बड़े ही प्रेम से मेरी ओर देख रहे हैं। यह देखते ही भीम का क्रोध उतर गया! उसने झुक कर पिता को प्रणाम किया और पूछा—"पिता जी! मुझे क्या आज्ञा होती है?" राणा कभी भीम को प्यार न करता था

और न कभी उसे अपने पास ही बुलाता था। परन्तु आज उसने भीम को प्यार से अपने पास बिठाया।

पिता का यह रङ्ग-ढङ्ग देख भीम को अचरज हुआ। उसने फिर राणा से कहा—"पिता जी! आपको क्या चिन्ता है? आपने किस लिये मुझे बुलाया है? आज्ञा दीजिए, मैं सेवा के लिए तैयार हूँ।" राणा ने उससे कहा—"बेटा! मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया है। खैर, जो होना था, वह तो हो ही चुका, अब उन बातों को भूल जाओ। तुम मेरे बड़े बेटे हो, मैं तुम्हीं को राजा बनाऊँगा। अब किसी प्रकार का सोच न करो। पर चिन्ता की बात है, तो यही कि जयसिंह अब तक यही समझता आ रहा है कि राजा मैं ही बनूँगा। अब राज न मिलने से निराश होकर वह बिना गड़बड़ किए न रहेगा। अपने साथियों को लेकर झगड़ा-फ़साद करेगा। राज्य की बड़ी हानि होगी, मुफ़्त में हजारों आदमी मारे जावेंगे। सो तुम एक काम करो, यही मेरी तलवार ले जाओ, और चुपके से जयसिंह का

सिर उड़ा दो। बस, फिर किसी प्रकार का खटका न रहेगा। एक जान जायगी, पर हजारों का खून तो न होगा।"

भीम ने पिता की ये बातें सुनीं तो सन्नाटे में आ गया। वह मन ही मन सोचने लगा—पिता जी कह क्या रहे हैं, कहीं मेरी परीक्षा तो नहीं लेना चाहते? जो कुछ भी हो, पर मैं वह काम न करूँगा जिससे मेरे नाम में धब्बा लगे। भाई के खून से रँगा हुआ सिंहासन मुझे न चाहिए। गरीब ही बना रहूँगा और क्या? कोई पीछे नाम तो न धरेगा।

भीम को चुप देख राणा ने फिर उससे कहा—"बेटा! क्या सोचते हो? यह काम करने में कुछ बुराई नहीं है, तुम न्याय के लिये—देश की भलाई के लिये यह काम करोगे। इसमें मेरा ही क़सूर है, तुम बेक़सूर हो। खैर, जाओ अधिक सोच विचार करने की ज़रूरत नहीं है। यह तलवार लो, मैं हुक्म देता हूँ कि फौरन जयसिंह का काम तमाम कर दो।"

भीम की आँखें डबडबा आईं। उसने त
वार पिता के पैरों पर रख दी और हाथ जोड़
जवाब दिया—"पिता जी, आप ने मेरे साथ
अन्याय किया था, उसका बदला मुझे मि
गया। आप ने गद्दी मुझे दे दी है। मैं गद्दी
मालिक हो चुका। पर अब मैं अपनी खुशी
जयसिंह को गद्दी देता हूँ और आप के सा
प्रण करता हूँ कि मैं गद्दी के लिये कभी भाई
झगड़ा न करूँगा और न राज्य पाने का खया
ही मन में लाऊँगा।" राणा ने प्रेम से भीम
गले लगा लिया।

इस प्रकार सारा झगड़ा मिट गया। रा
रानी की चिन्ता का भार हलका हो गया
यद्यपि भीम राजा नहीं हुआ। पर उसने मेवा
की प्रजा के हृदय पर अधिकार जमा लिया
घर घर भीम के इस त्याग की बड़ाई होती थी
लोग जयसिंह से भी अधिक भीमसिंह का आद
करते थे।

—ज़हूर बख़्श 'हिन्दी कोविद'

भालू महाराज

मुक़दमा जीत गए हैं आज।
खड़े हैं क्या भालू महाराज॥

क्या होगा ?

यहाँ एक लड़का रहता था,
भूल गया है उसका नाम।
बड़ा आलसी था वह शायद,
करता था न समय पर काम॥

और मदरसे जब जाता था,
कर देता था देर बड़ी।
इसी लिये उसके दादा ने,
एक उसे दी जेब घड़ी॥

पर न दशा कुछ सुधरी उसकी,
और लगा करने देरी।
तब गुस्सा कर बोले दादा—
"दो लौटाल घड़ी मेरी॥"

पर जैसा सुनता हूं मैं वह,
लड़का था चालाक बड़ा।
पापड़ सा सब घड़ी खा गया,
था अति उसका दाँत कड़ा॥

मल कर हाथ रह गये दादा,
हाल सुनो अब आगे का।
बच्चो! चेहरा लगा बिगड़ने,
उस आलसी अभागे का॥

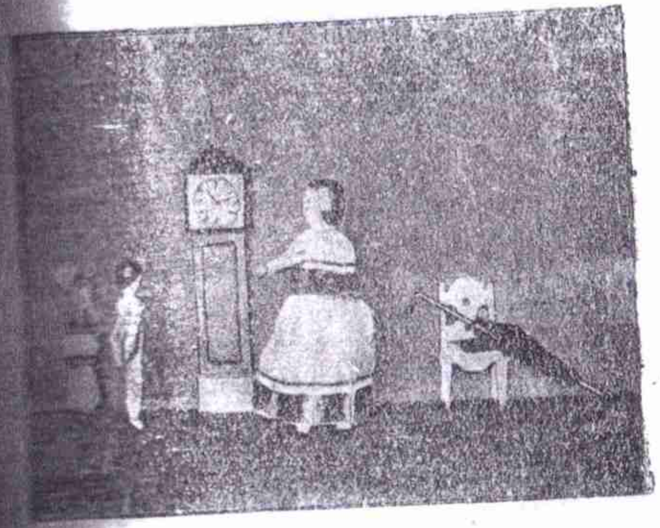

ज्यों ज्यों लगा बड़ा होने वह,
त्यों त्यों चेहरा गोल हुआ।
और निकल जब मूछें आईं,
तब तो अति अनमोल हुआ॥

यानी मुख ही घड़ी हो गया,
खुशी बढ़ी उसके मन में।
अब वह समय देख लेता है।

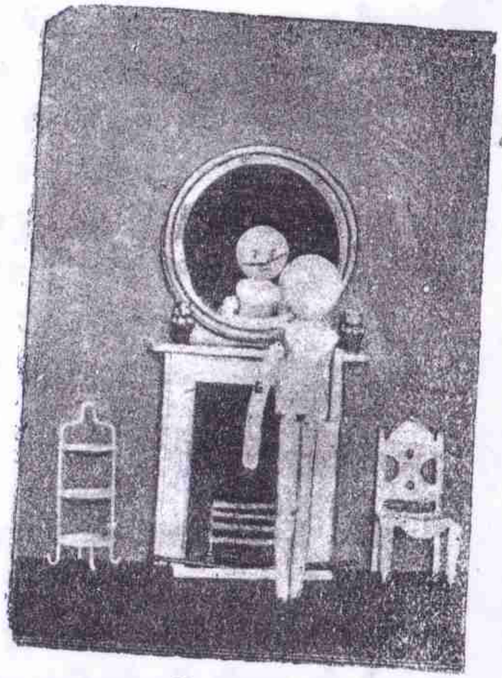

जब जी होता दर्पण में॥
बढ़ते बढ़ते वह दादा औ'
दादा से परदादा बन।

नाती पोतों को बतलाने,
समय लगा घर में टन टन॥
बच्चो! सोचो क्या होगा?
यदि लड़के घड़ी मगाएँगे।
और समय पर नहीं,
पाठशाला में पढ़ने जाएँगे।

—गपोड़ाचार्य्य।

छाया के खेल

पहिले चित्र में कुत्ता और दूसरे में बिल्ली

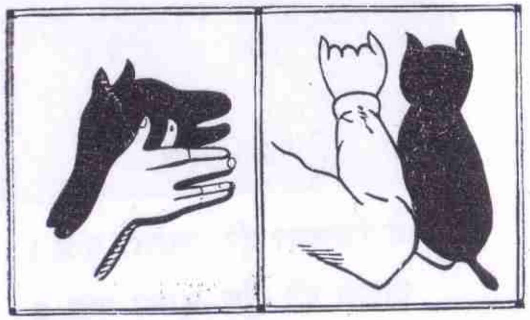

बनाना बताया गया है।

बालको! रात को दीवार पर जरा बना कर तो देखो।

दोनों भाई

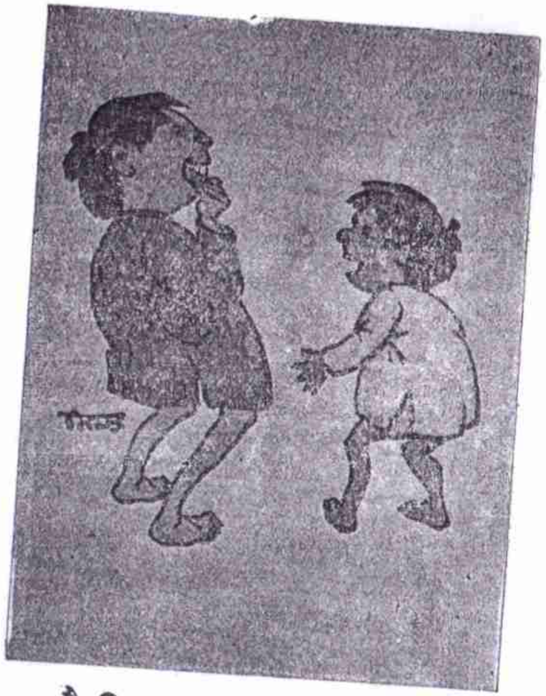

है जितना ही खाता एक।
उतना ही मुँह बाता एक॥

———

चिड़ीमार और बौना

किसी गाँव में एक चिड़ीमार रहता था। वह बड़ा गरीब था। जङ्गल में जाकर चिड़ियाँ पकड़ लाता और उन्हें बेंच कर किसी तरह अपना और अपनी स्त्री का पेट पालता था। एक बार वह बहुत सी चिड़ियाँ पकड़ लाया। और बड़ा खुश हुआ कि इस बार कुछ ज्यादा पैसे मिलेंगे। पर उसके दुर्भाग्य से सारी चिड़ियाँ जाल के खुल जाने से उड़ गयीं। केवल एक बुड्ढा तोता रह गया। यह देख उसे बड़ा दुःख हुआ। परन्तु करता क्या? उसी तोते को बेंच खाना लाने के लिए उसने अपनी स्त्री को भेज दिया।

उस तोते को लेकर वह नगर की ओर चल पड़ी। रास्ता एक पहाड़ी के ऊपर से जाता था। जब पहाड़ी पर चढ़ते चढ़ते वह थक जाती तो रास्ते में बैठ जाती थी और फिर चलने लगती थी। पहाड़ी पर जाते समय उसे एक बौना मिला।

बौने ने रुक कर उससे पूछा—"तुम कहाँ जा रही हो?"

स्त्री ने लड़खड़ाते हुए कहा—"मैं बाजार में यह तोता बेचने जारही हूँ।"

बौने ने फिर कहा—"तुम मुझे अपना तोता देदो, और बदले में मैं तुम्हें एक बर्तन दूँगा?"

चिड़ीमार की स्त्री ने सोचा कि बर्तन लेकर तोता देना ठीक नहीं है। वह बोली—"यह तो मुझे ठीक नहीं जँचता। क्या तुम समझते हो कि मैं एक बर्तन की कीमत भी नहीं जानती।"

बौने ने कहा—"यह मत समझो कि मेरे बर्तन से तुम्हारे तोते की कीमत ज्यादा है। अगर तुम ऐसा करना नहीं चाहती हो तो कोई हर्ज नहीं।"

चिड़ीमार की स्त्री कुछ देर तक सोचती रही, पर बाद को राजी होगयी। बौना उसी समय गायब हो गया। ज़रा सी देर में वह फिर एक काला बर्तन लिये प्रकट हुआ। बर्तन उस स्त्री को देकर बोला—"जब तक यह बर्तन तुम्हारे पास रहेगा तुम्हें किसी चीज की ज़रूरत न होगी। जब तुम इसे

छाया में रख कपड़े से ढक कर कहोगी—'बर्तन! भर जाओ' तो यह भर जायगा। लेकिन इसे न तो कभी साफ़ ही करना और न कभी धूप ही में रखना।"

यह कहते ही बौना गायब हो गया। वह स्त्री बड़ी खुशी से घर आयी और उस बर्तन की परीक्षा ली। छाया में बर्तन रख कर उसे कपड़े से ढक कर ज्योंही उसने बर्तन से कहा—'बर्तन! भर जाओ' त्यों ही वह तरह तरह की भोजन की सामग्री से भर गया। यह देख वह चिड़ीमार के पास दौड़ी आई और सारा हाल कह सुनाया। तब से वे दोनों बड़े सुख से रहने लगे।

ज्यों ज्यों दिन बीतते थे त्यों त्यों बर्तन काला होता जाता था। यहाँ तक कि वह बहुत काला होगया और बहुत बुरा मालूम देने लगा। चिड़ीमार की स्त्री बौने के कहे को भूल गयी। उसने बर्तन को खूब माँजा। माँजने से वह बिलकुल साफ हो गया। उसके बाद उसने बर्तन को सूखने को धूप में रख दिया। धूप में वह सोने की तरह चमकने

लगा। चिड़ीमार की स्त्री इसे ऐसा चमकते देख बड़ी प्रसन्न हुई, परन्तु ज्योंही उसे उठाने को हाथ फैलाया उसे एक बड़ा ज़ोर का धक्का लगा और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। जब वह होश में आई तो उठ कर देखा कि बर्तन वहाँ नहीं है।

बर्तन के गायब होने से दोनों को बड़ा दुःख हुआ। दोनों बहुत रोये पर अब हो क्या सकता था? उनकी फिर वही दशा हो गयी। वे टुकड़े टुकड़े को फिर तरसने लगे। आखिरकार एक दिन चिड़ीमार की स्त्री ने चिड़ीमार को उसी जगह इस आशा से भेजा कि शायद वह दयालु बौना फिर मिल जाय।

खाली हाथ जाना अच्छा नहीं, यह सोच कर चिड़ीमार ने कुछ रुपया उधार लिया और उसकी एक बकरी मोल लेकर उसी पहाड़ी की ओर चल पड़ा। पहाड़ी पर जाकर वह बड़ी देर तक खड़ा रहा पर उसे कोई न मिला। निराश होकर ज्योंही वह चलने को था उसे किसी के पैर की आहट मिली। उसने घूमकर तेखा तो एक बौना उसके पीछे खड़ा

था। बौने को अपने पीछे देख उसके जी में जी आया।

बौने ने पूछा—"तुम कहाँ जा रहे हो।"

"मैं बाजार जा रहा हूँ, इस बकरी को बेचना है" उसने अटकते हुए उत्तर दिया।

बौना बोला—"तुम व्यर्थ ही मेहनत कर रहे हो। बकरियों की इतनी बड़ी भीड़ में तुम्हारी एक बकरी कौन देखेगा। यह मुझे दे दो। इसके बदले में मैं तुम्हें एक गेंद दूँगा।"

"अरे, गेंद मेरे किस काम की है, बकरी बेच कर जो धन मुझे मिलेगा उससे मैं ऐसी चाहे जितनी गेंदें ले लूँगा," चिड़ीमार बोला।

बौने ने कहा—"यह मत समझो कि तुमको बाजार में ऐसी गेंद मिल जावेगी जैसी मेरी है। अगर तुम गेंद से बकरी नहीं बदलना चाहते तो नसही।"

यह सुन कर चिड़ीमार थोड़ी देर तो चुप रहा, परन्तु बर्तन की याद आते ही गेंद लेने को राजी हो गया।

गेंद देते हुए बौने ने कहा—"लो, यह गेंद

ले जाओ। घर के अन्दर इसे ज़मीन पर रख कर इससे कहना 'गेंद ! गेंद ! टोपी उतारो' पर इस बात का ध्यान रहे कि उस समय कोई खिड़की या दरवाजा खुला न रह जाय।"

गेंद लेकर चिड़ीमार घर चला। गेंद बड़ी भारी थी। बड़ी मुश्किल से वह उसे घर तक ले जा सका। घर जाकर उसने गेंद की परीक्षा ली। सब दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर दीं। उसे जमीन पर रख कर कहा— 'गेंद ! गेंद ! टोपी उतारो।"

यह सुनते ही गेंद फ़र्श पर इधर उधर दौड़ने लगी। उसकी तेजी बढ़ती ही जाती थी। आखिर में उसके बीच से दो टुकड़े हो गए। टुकड़े होते ही दोनों भागों में से छोटे छोटे मनुष्य सुनहली थालियों में तरह तरह के भोजन लेकर निकले। और उन दोनों को भोजन परस कर फिर गेंद में जा छिपे।

चिड़ीमार अपनी स्त्री के साथ बड़ी खुशी से खाना खाने लगा। ऐसा खाना बर्तन खो जाने के बाद उन्हें फ़िर नहीं मिला था।

ज्यों ही वे दोनों खाना खा चुके गेंद फ़िर खुली और वे आदमी फ़िर बाहर निकले। उन्होंने सब बर्तन गेंद में रख लिए। गेंद फ़िर बन्द हो गयी।

चिड़ीमार अब बड़ी खुशी से रहने लगा। इसी प्रकार बहुत दिन बीत गए। गाँव भर में इस गेंद की करामात की बात फ़ूट निकली। सब गाँव वालों को चिड़ीमार की गेंद का सारा हाल मालूम हो गया। धीरे धीरे यह बात उस गाँव के जिमींदार के कानों में भी पड़ी। उसने चिड़ीमार को बुलाया और उससे गेंद छीन ली। चिड़ीमार फ़िर यों ही रह गया। दूसरे दिन वह मुँह लटकाए फ़िर उसी पहाड़ी पर गया। वह अपने साथ दो बैल भी लेता गया था। वहाँ उसे फ़िर वही बौना मिल गया। बौने से उसने उस गेंद के छीने जाने का हाल बताया और कहा—"इस बार मुझे उससे भी अच्छी गेंद दो ! इस बार मैं दो बैल लाया हूँ।"

"बहुत अच्छा," कह कर बौना गायब हो गया। थोड़ी देर में वह फ़िर एक बड़ी गेंद

लिए हुए प्रकट हुआ और उसे चिड़ीमार को देकर बोला—"लो ! यह गेंद उससे कहीं अच्छी है। उसी प्रकार इससे भी कहना यह भी खुलेगी।"

गेंद लेकर चिड़ीमार घर आया। वहाँ उसी प्रकार इस गेंद से भी कहा। यह गेंद उससे भी तेजी से घूमने लगी। घूमते घूमते बीच से फट गयी। इसमें से दो राक्षस निकले। दोनों एक एक मोटा लट्ठ लिए हुए थे।

राक्षसों ने पूछा—"कहो, क्या हुकुम है ?" राक्षसों को देख कर पहिले तो चिड़ीमार जरा डरा परन्तु फिर सम्हल गया और बोला—"मेरी पहली गेंद जिमींदार से वापस करा दो।"

"अच्छा, हमें वहाँ ले चलो, कहते हुए राक्षस फिर गेंद में घुस गए। गेंद बन्द हो गयी। चिड़ीमार गेंद को उठा कर जिमीदार के घर ले आया। वहाँ आकर उसने जिमीदार से मिलना चाहा। जिमीदार ने पहिले तो मना कर दिया। परन्तु चिड़ीमार ने बड़ी विनती

की और फिर कहला भेजा कि मैं पहली गेंद से भी अच्छी एक दूसरी गेंद लाया हूँ। जिमींदार यह सुनते ही लालच में आ गया और उसे अन्दर बुला लिया। उस दिन जिमींदार ने अपने सब मित्रों और सम्बन्धियों की दावत की थी। शाम का समय था। सब जिमींदार के साथ बैठे दावत उड़ा रहे थे। चिड़ीमार वहाँ गया। ज़िमींदार उससे बोला, "अच्छा, अब तुम इस गेंद की करामात दिखाओ।"

चारों ओर के दरवाजे बन्द थे ही। चिड़ीमार ने गेंद से कहा,"गेंद ! टोपी उतारो।" यह कहते ही गेंद नाचने लगी। नाचते नाचते गेंद फट गयी। दोनों राक्षस लट्ठ लिए निकले पड़े और वहाँ बैठे हुए सब आदमियों को पीटने लगे। उन सब को बहुत पीटा। अब जिमींदार की बारी आयी। जिमींदार ने चिल्लाकर चिड़ीमार से उस गेंद को बन्द करने के लिए कहा। परन्तु वह बोला—"जब तक पहिली गेंद नहीं मिलेगी, ये दोनों न मानेंगे।" ज़िमींदार डर से काँपने लगा। मुँह से बोली नहीं निकलती

थी। उसी उस सन्दूक की चाभी जिसमें ... थी चिड़ीमार के पास फेंक दो। इधर राक्षस ... उसे भी पीटने लगे। चिड़ीमार ने सन्दूक ... से गेंद निकाल ली और उस गेंद को बन्द ... दिया। दोनों गेंद लेकर वह खुशी खुशी ... आया।

उस दिन से गाँव भर के लोग उससे डर... लगे। उसका बड़ा आदर होने लगा। जिमींदा... भी उससे कुछ न बोलता था। चिड़ीमार अपन... स्त्री के साथ सुख से रहने लगा। इसी तर... बहुत दिन बीत गए। सुख में आदमी लापरवा... हो जाता है। यही दशा चिड़ीमार की भी हुई... अब वह लापरवाह हो गया। एक दिन वह गें... से 'टोपी उतारो' कहते समय कमरे का दरवाज... बन्द करना भूल गया। गेंद नाचते नाचते... बाहर की ओर चली गयी। बड़ी गेंद भी छोटी... के पीछे भागने लगी। चिड़ीमार बहुत दौड़ा... परन्तु वह हाथ न आयी। पहाड़ी थोड़ी दूर... रह गयी तो दोनों गेंद बीच से फट गयीं... पहिली गेंद से छोटे छोटे आदमी निकल कर ... में भाग गए। बड़ी गेंद से राक्षस ... । उस समय वे बड़े डरावने हो रहे थे। ... देख चिड़ीमार की आगे बढ़ने की हिम्मत ... । वे भी उसी पहाड़ी की ओर चल दिए। ...मार अपनी लापरवाही का नतीजा पा अपने ... आया।

—गोपालदेवी।

भाई की याद

कहो, कौन सी बात जी में समाई—
गया जो मुझे छोड़ तू हाय, भाई!
यहाँ साथ तेरे हुई क्या बुराई?
दया जो तुझे हाय, मुझ पर न आई॥

न मेरी कभी क्या तुझे याद आती?
जुदाई तुझे क्या नहीं है सताती?
दिया हाय, मेरा भुला प्रेम सारा।
न जाने कहाँ बन्धु! तू हा, सिधारा?

अकेला मुझे क्यों किया बन्धु ! तू ने ?
सुखों को दिया क्यों मिटा बन्धु ! तू ने ?
मुझे चाहता था यहाँ नित्य भाई !
वहाँ याद क्यों हाय, तू ने भुलाई ?

मुझे हाय, भाई ! नहीं भूलता तू ।
सदा आँख में हाय, है झूलता तू ॥
पड़ा रो रहा हूँ बिना बन्धु ! तेरे ।
बड़ा शोक तेरा मुझे हाय घेरे ॥

करूँ क्या ? तुझे हा, कहाँ बन्धु पाऊँ ?
कहाँ खोजने मैं तुझे हाय, जाऊँ ?
तुझे मैं कहाँ से यहाँ टेर लाऊँ ?
कहाँ से तुझे हाय, भाई ! बुलाऊँ ?

कहाँ तू मुझे प्राण-प्यारा ! मिलेगा ?
कहाँ हाय, मेरा सहारा ! मिलेगा ?
बिना बन्धु ! तेरे न खाना सुहाता ।
नहीं खेलना कूदना हाय, भाता ॥

दुखी हूँ बड़ा ले किसे साथ खाऊँ ?
किसे साथ ले खेलने दूर जाऊँ ?
तथा, ले किसे साथ मैं गीत गाऊँ ?
किसे हाय, मैं आज भाई बनाऊँ ?

मुझे था सदा बन्धु ! तेरा सहारा ।
न मैंने तुझे था कभी भी बिसारा ॥
दिया किन्तु तू ने मुझे छोड़ ऐसे—
बुरी वस्तु को छोड़ते लोग जैसे ॥

मुझे कौन सा व्यक्ति 'भाई' कहेगा ?
सदा साथ में कौन मेरे रहेगा ?
सहारा मुझे कौन हे बन्धु ! देगा ?
दुखों में, सुखों में सदा भाग लेगा ॥

मुझे बन्धु ! तेरी न जो याद आती—
न होती कभी हाय, दो टूक छाती ?
तुझे चित्त से बन्धु ! कैसे भुलाऊँ ?
मिले तू कहीं, तो गले से लगाऊँ ॥

—'स्वर्ग-सहोदर ।'

किताब का जादू

यह किताब का एक बड़ा सुन्दर खेल है। किसी मित्र को या किसी ऐसे आदमी को जो अपने को बड़ा अक्लमन्द समझता है बुलाओ। उससे कहो कि वह अलमारी में से कोई सी किताब उठा ले और उसे जहाँ से चाहे वहीं से खोल ले। फिर उससे किसी भी पृष्ठ की पहिली ९ पंक्तियों में से कोई सा एक शब्द ले लेने को कहो। पर उसे यह समझा दो कि उन ९ पंक्तियों में से किसी भी पंक्ति के नवें शब्द के बाद का शब्द न ले। फिर उसे एक कागज और एक पेंसिल दे दो। तुम दूर खड़े हो जाओ ताकि जो कुछ वह लिखे तुम्हें न दिखाई दे। अब उसे उस पृष्ठ की संख्या को जिसकी ९ पंक्तियों में से उसने एक शब्द चुना है १० से गुणा करने को कहो। गुणनफल में २५ और उस पंक्ति की संख्या जिसमें से शब्द चुना गया है जोड़ने को कहो। उससे फिर कहो कि इनको जोड़ कर जो कुछ आवे उसे फिर १० से गुणा करे और इस

[illegible] जो गुणनफल आवे उसमें उस शब्द की संख्या [illegible] उसने चुना है जोड़ कर योग तुम्हें बता दे। [illegible] उसे सुन लो या एक कागज पर लिख [illegible] अपने चेहरे का हाव भाव ऐसा बनाओ कि [illegible] तुम कोई बड़ा कठिन सवाल सोच रहे हो। [illegible] तुम्हें अब कुछ नहीं करना है। केवल बताई [illegible] संख्या में से २५० मन ही मन घटा देना है।

२५० घटाने के बाद जो संख्या बचेगी उसमें [illegible] अङ्क तो उस शब्द की संख्या होगी जो उसने लिया था, दूसरा अङ्क उस पंक्ति की संख्या [illegible] जिसमें से शब्द चुना गया था और बाकी [illegible] उस पृष्ठ की संख्या होगी जिसमें से शब्द लिया गया था।

मानो लो तुम्हारे मित्र ने ८५ पृष्ठ की आठवीं पंक्ति से चौथा शब्द चुना। अब उसे इस तरह करना चाहिए—

८५ × १० = ८५०

८५० + २५ + ८ = ८८३

८८३ × १० = ८८३०

८८३० + ४ = ८८३४

अब उसने तुमको जो संख्या बताई वह है-८८३४। इसमें से तुम २५० घटादो।

८८३४—२५० = ८५८४

अब इसमें ८५, ८, और ४, तुम्हारा उत्तर होगया।

इस प्रकार बताने से सब अचम्भे में आजाएँगे और तुम्हारी बड़ी प्रशंसा होगी।

—सत्य जीवन शर्म्मा।

एक बेवकूफ लड़का

एक यहाँ लड़का रहता था,
किन्तु अकल थी उसकी खोटी।
समझ न वह सकता था क्यों है,
लटक रही पीछे को चोटी॥

मन में था नित यही सोचता,
आगे उसे झुलाऊँ कैसे?
उस सुन्दर उड़ती चोटी को,
चेहरे पर लटकाऊँ कैसे?

बोला हँसकर—भेद गया मिल
यदि पीछे को घूम पड़ूँगा।
आगे आजाएगी चोटी,
मैं खुश होऊँगा अकड़ूँगा॥

बस वह बच्चा! लगा घूमने,
पर चोटी भी लगी घूमने।
मुँह उसका रह गया खुला ही,
पाया चोटी नहीं चूमने॥

बड़ी देर तक उछला कूदा,
आगे धाया पीछे आया।
पर चोटी को चावल भर भी,
नहीं जगह से हटने पाया॥

तब माँ ने फुसलाया यों कह,
लाल! अकल है तेरी खोटी।
कौन पीठ पर पहरा देगा?
आगे यदि आएगी चोटी॥

—लक्ष्मीकान्त वर्मा।

सहारा का रेगिस्तान

(गताङ्क से आगे)

सहारा निवासी विशेष कर नखलिस्तानों के ही आस पास रहते हैं। तुमने सुना होगा कि अफ्रीका में 'हबशी' जाति के काले आदमी रहते हैं। किन्तु सहारा में ये लोग बहुत ही कम पाये जाते हैं। यहाँ के रहने वाले अधिकतर अरब देश के मुसलमान हैं। इनमें से कुछ लोग सदा अपने बाल बच्चों सहित इधर उधर घूमा फिरा करते हैं। इनकी छोटी मोटी गृहस्थी भी इन्हीं के साथ रहती है। जहाँ कहीं विश्राम के लिए ठहरना होता है वहाँ अपने खेमें लगा लेते हैं। जब तक जी चाहा ठहरे और "लात मारी झोपड़ी चूल्हे मियाँ सलाम" करके चल दिये।

अरब लोग बड़े घमण्डी होते हैं और किसी से बहुत मिलना जुलना पसन्द नहीं करते। इन लोगों में एक आदत बड़ी अच्छी होती है। वे छोटे बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। कोई भी

अरब न तो कभी बच्चों को झिड़कता है, न मारता पीटता है और न कभी उनका दिल दुखाता है। कहा जाता है कि एक बार एक अरब सुल्तान ने एक नगर पर चढ़ाई की और उसे चारों ओर से घेर लिया। नगर निवासी भूखों मरने लगे। सुल्तान ने जब यह सुना तो अपने पास से उस नगर के बच्चों के लिये दूध भिजवाया। इसी से तुम समझ सकते हो कि ये लोग बच्चों का कितना आदर और प्यार करते हैं।

सहारा निवासी ऊँट बहुत पालते हैं क्योंकि यही एक पशु है जो रेगिस्तान में उनके बहुत काम आता है। इसके पैरों के तलुवे गद्दीदार और चपटे होते हैं। इसलिये बालू में धँस नहीं सकते। इसकी आँखों की पलकें लम्बी होती हैं और नथुने ऐसे होते हैं कि जब चाहे तब उन्हें सिकोड़ कर बन्द करले। इससे उसे लाभ यह होता है कि रेगिस्तान की उड़ती हुई बालू उसकी आखों और नाक में नहीं जा सकती। रेगिस्तान में उगने वाली भद्दी और काँटेदार झाड़ियों में भी यह पेट भर कर

चर लेता है। ऊँट में एक और बात बड़ी विचित्र होती है। वह ५—६ दिन के लिए एक दम से पानी पी लेता है। उसके पेट में एक थैली होती है उसी में यह सारा पानी भरा रहता है। कहते हैं कि प्रायः अरब सौदागर रेगिस्तान में यात्रा करते हुए जब प्यास से बेदम हो जाते हैं और कहीं भी पानी नहीं मिलता तो ऊँट को मार कर और उसके पेट से पानी निकाल कर अपनी प्यास बुझाते हैं। इन्हीं कारणों से ऊँट को 'रेगिस्तान का जहाज' कहा जाता है। और कोई पशु न तो रेगिस्तान में यात्रा ही कर सकता है और न यात्रियों के इतना काम ही आ सकता है। यही कारण है कि सहारा निवासी ऊँट की बड़ी कदर करते हैं नखलिस्तान के रहने वाले भेड़, बकरी, घोड़ा आदि भी पालते हैं।

सहारा निवासियों का पेशा अधिकतर सौदागरी है। कई सौदागरों का गिरोह एक साथ चलता है। खाने पीने की सारी सामग्री अपने साथ ऊँटों पर लाद लेते हैं। रास्ते में अपने शरीर को खाल अथवा कपड़ों से

सर से पैर तक ढके रहते हैं। यदि ऐसा न करें तो गरमी और उड़ती हुई बालू से शरीर फट जाय और घाव होजायँ। सौदागरों के इन गरोहों को 'कारवाँ' कहते हैं। प्रत्येक कारवाँ का एक मुखिया या सर्दार हुआ करता है। उसकी देवता के समान प्रतिष्ठा होती है। उसकी आज्ञा के प्रतिकूल कोई कुछ नहीं करता है। सभी उसका विश्वास करते हैं। वह रेगिस्तान के सभी उन रास्तों से परिचित होता है जिन्हें साधारण मनुष्य समझ भी नहीं सकता। वही अपने कारवाँ को रास्ता दिखाता है। सब का जीना मरना एक प्रकार से उसी के हाथ में होता है। असल में मुखिया लोग होते भी बड़े होशियार और अनुभवी हैं। इनसे भूल बहुत कम होती है। जब मुखिया अपने कारवाँ को लेकर घर से चलता है तो गाँव और घर वाले उसकी कुशल मनाते और प्रार्थना करते हैं कि वह अच्छी तरह घर लौट आवे। सच पूँछो तो रेगिस्तान की यात्रा होती भी बड़ी विकट है। प्रायः लोग रास्ते में ही मर जाते हैं। कभी खाने पीने की सामग्री

समाप्त हो जाने पर भूख और प्यास से निकल जाता है। कभी रास्ता भूलकर भ जाते हैं क्योंकि वहाँ न तो सड़कें होती और न वृक्ष। कभी २ बड़े वेग की आ आजाती है और बालू से गला घुट कर प्राण होजाता है। कहीं २ लुटेरों का आक्रमण हो है तो सारा कारवाँ तितर बितर होजाता इसी तरह की बड़ी २ कठिनाइयाँ झेलनी प हैं। इन सारी आफतों से बच कर जब मुखि और उसका कारवाँ सकुशल घर लौट आता तो उसे बधाइयाँ दी जाती हैं और खुशी दावतें और जल्से भी होते हैं।

—बुद्धिसागर वर्मा विशारद बी०

उपदेश

प्यारे बच्चो! विद्या पढ़ लो।
उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ लो॥
पढ़ने से ही सुख मिलता है।
दुखी हृदय सुख से खिलता है॥

मातु पिता की आज्ञा मानो।
उन्हें ईश से बढ़ कर जानो॥
सन्तोषी बन कर नित रहना।
दुख सुख प्यारे! सब को सहना॥

सब दिन मीठी बातें बोलो।
झूठ कथन में मुँह मत खोलो॥
निज साथी से प्रेम से करो नित।
कभी न होओ कुछ भी चिन्तित॥

पढ़ो लिखोगे सुख पाओगे।
मातृ भूमि को अपनाओगे॥
आशा है लग रही तुम्हारी।
तुमसे होंगे सभी सुखारी॥

—श्रीनृसिंह पाठक "अमर"

चलना सीखो

यह एक प्रकार की टोकरी है। बेलजियम छोटे छोटे बच्चों को जब वे चलना सीखते हैं में खड़ा कर दिया जाता है। वे इसके स खड़े रहते हैं और अन्दर ही अन्दर सरका हैं। इसी से धीरे धीरे वे चलना सीख जाते हैं।

हम तकिया क्यों लगाते हैं ?

बालको ! सोते समय क्या तुम भी तकिया लगाते हो ? मैंने देखा है कि सोते समय अक्सर बच्चे तकिए के लिए लड़ा करते हैं। क्या तुम बता सकते हो कि तकिया क्यों लगाया जाता है ? बात यह है कि जब हम सोते हैं तो हमारे सिर का खून धीरे धीरे शरीर के नीचे के भाग में उतर आता है और हमारा सिर हलका हो जाता है। सिर हलका होने से ही हमें नींद आती है। यदि सोते समय शिर भारी रहे और वहाँ का रक्त नीचे न उतरे तो नींद नहीं आएगी। कभी कभी ऐसा भी होता है कि रात को प्रयत्न करने पर भी जल्दी नींद नहीं आती। उसका कारण यही है कि उस समय हमारा खून नीचे नहीं जाता और हमारा सिर हलका नहीं होने पाता। उस समय ऊँचे ऊँचे तकिए लगाने चाहिए। ऐसा करने से नींद आजावेगी। सोने के समय सिर के नीचे तकिया लगाने की रीति चल पड़ने का यही कारण है।

अक्सर वैद्य और डाक्टर उस रोगी
जिसे रात को नींद नहीं आती ढालवाँ खा
ऊँचा तकिया लगाकर सोने को कहते हैं
इसलिए कि मस्तिष्क का रक्त नीचे उतर
और रोगी को नींद आजाए।

—रामसिंह बी० ए०

मेरी फुलवारी

माता बोली सुनले बच्चे,
तू है मेरी फुलवारी।
तुझे देख कर मैं जीती हूँ,
तुझ पर हूँ सब कुछ हारी।

तुझसे बढ़के आनन्द नहीं,
फूलों में मैं पाऊँगी।
तुझको छोड़ इसी से फूलों,
को क्या मैं ललचाऊँगी।

फूलों की चुन के मालायें,
सुन्दर जो है बनवातीं।
...ते पड़ी तेरी ये बाहें,
हैं मुझको अधिक सुहातीं ॥३॥

खिले फूल हैं फुलवारी के,
बुला रहे हैं जो मुझको।
बढ़ कर हँसता तेरा, इससे
नहीं रुला सकती तुझको ॥४॥

कोयल की मीठी बोली से,
है तेरी बोली प्यारी।
इससे कहती मेरे बच्चे,
तू है मेरी फुलवारी ॥५॥

—विश्वप्रकाश विशारद।

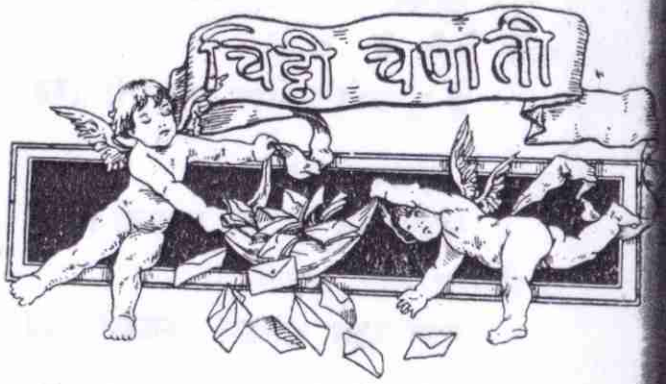

[हमारे पास हर महीने बालकों की कुछ ऐसी चिट्ठि[याँ] आती रहती हैं जिनके पढ़ने में बड़ा मज़ा आता है। ये [चि]ट्ठियाँ इस कालम में पाठकों के मनोरञ्जन के लिये छापी जा[ती] हैं। बालक चिट्ठी खूब सोच समझ कर लिखें, क्योंकि चिट्ठि[याँ] बिलकुल ज्यों की त्यों छापी जाती हैं। कोई भूल होगी तो लो[ग] उन्हीं की हँसी उड़ावेंगे।

—'शिशु'-सम्पादक।

(१)

श्रीमान सम्पादक जी प्रणाम,

कृपा करके यह मेरी चिट्ठी शिशु में छाप दीजिये मैंने शिशु का विशेषांक खूब पढ़ा और मुझे यह बड़ा ही प्यारा लगता है उसकी गधे वाली कहानी में खूब आनन्द आया। पर एक

[बा]त तो बतलाइये कि मुन्सिफ जी ने उस कलवा [ते]ली को सिपाहियों से पिटवाया क्यों नहीं [औ]र मौलवी जी से रुपये क्यों नहीं दिलावाये।

—बालकृष्ण विद्यार्थी, देवबन्द।

[उनके पास आप जैसे चतुर सलाहकार नहीं थे]

(२)

प्रिय महाशय जी,

मैं अपने एक दोस्त के फ़ुलबूट जूते मारना चाहता हूँ। क्योंकि वह भी मुझे मारा करता है। कृपया लिखिये मैं उसे मारूं या नहीं, तथा बाज़ार में या घर पर मारूँ, उत्तर शीघ्र दीजिये।

आपका—

कैलाश चन्द।

[न बाजार में, न घर पर बल्कि उसकी पीठ पर]

(३)

सिरीमान समपादक जी

मैं तुमसे एकु सवालु पूछता हूँ। आप जलूल जलूल छिछु में छाप देना औल उतल भी लिख देना मेले कका औल अमा बाल बाल मेले गाल चूमा कलती हैं। मेने उनसे पूछा तौ विनने कही

कि छोते लरकों के गाल मीथे होते हैं। छो तु
छाँची छाँची छिठ्ठु में लिखयो कि जि का घ
है। अब के जो छिठ्ठु आवे उछी में लिख देना
तुम जिन जानना कै चिठी हमने काऊ को दिखा
होय हमने चिठी लिखने के पहलेई पतो लि
चाय लओ है।

द० किरपा संकर, चन्द

[तुमने बहुत अच्छो लिखो है साँची बात तो जि है कि छ
लरके मिठाई घनी खात्त एँ। गाल मीठो होयगोई पर दवा
है कि तुम मरचा लएँ रहा करौ और जब कका अमा च
आवें तो सोई मरचा उनके मुख में डारि दीयो करो]

अनोखी बातें

१२ वर्ष का सम्पादक

लन्दन में 'न्यू स्कूल वाय' नामक बालकों का एक पत्र निकलता है। इस पत्र का सम्पादक हैरीसीड नाम का एक १२ वर्ष का लड़का है वह लड़का पत्र को बड़ी सज धज के साथ निकालता है। पत्र बड़ी उन्नति कर रहा है दिन पर दिन उसकी माँग बढ़ती ही जारही है।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

बावनों का सरदार

क्लैरेंस दुनिया भर में सबसे छोटा है। इनका शरीर केवल डेढ़ फीट ऊँचा रीर का वज़न साढ़े आठ सेर है। इनसे मनुष्य संसार में नहीं हैं।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

अजायबघर और रेत

अमरीका के शिकागो नगर में एक रेत का घर है। इसमें ३००० रेत की बोतलें हैं जिनमें अलग अलग तरह का रेत है। रेत पृथ्वी के भिन्न भिन्न भागों से लाया था।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

पेलकिन चिड़िया

पेलकिन एक बड़ी अजीब चिड़िया होती है। एक बार में एक पूरा कबूतर निगल जाती है।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

ज़हर और उसका असर

किसी भी प्रकार के ज़हर का असर सब जीवों पर एक सा नहीं होता। साँप का ज़हर जिससे आदमी तुरन्त ही मर जाता है नेवले को

कुछ असर नहीं करता। धतूरे की पत्तियाँ जिनके खाने से बहुत से कई जानवर मर जाते हैं खरगोश को कुछ असर नहीं करतीं। वह उन्हें बड़े स्वाद के साथ खाजाता है। अफ़ीम जिसे खाकर मनुष्य मर जाता है बकरी सहज ही में खा जाती है और उसे कोई असर नहीं होता। कहते हैं—एक बकरी उतना अफीम जिसे खाकर १००० आदमी मर जायँ—हजम कर जाती है।

❀ ❀ ❀ ❀

६० मंजिल का मकान

पिट्सवर्ग अमरीका में एक नगर है। यहाँ के एक विश्व-विद्यालय ने ३ करोड़ रुपया लगा कर एक ६० मंजिल की इमारत विद्यार्थियों के रहने के लिए बनवाई है। इसमें १२०० विद्यार्थी रह सकेंगे।

❀ ❀ ❀ ❀

शहद की मक्खी

सीलोन के रहने वाले शहद की मक्खियाँ खाते हैं। जब वे कहीं शहद की मक्खी का छत्ता लगा देखते हैं उसके नीचे आग जला देते

हैं। जब मक्खियाँ जल कर ज़मीन पर गिर पड़ती हैं तो वे उन्हें बटोर कर घर ले आते हैं और उबाल कर खा जाते हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

सबसे बड़ी चिड़िया

अमरीका में एक तरह की चिड़िया पाई गई है जो दुनिया में सब से बड़ी है। जब यह उड़ती है तो इसकी लम्बाई ९ फीट से ११ फीट तक होती है। इसका वज़न २० सेर के लगभग होता है। वहाँ की सरकार ने ऐसा कानून बना दिया है कि उसे कोई मार नहीं सकता।

——

चुटकुले

नाना—राम! जब मैं तुम्हारी उम्रका था तो कभी झूठ नहीं बोलता था।

राम—तब नाना जी, आपने कबसे झूठ बोलना शुरू किया?

❀ ❀ ❀ ❀

लक्ष्मी नामक एक पाँच वर्ष की लड़की एक कार्ड पर कुछ लिख रही थी। उसकी माँ बोली- लक्ष्मी ! क्या कर रही हो ?

लक्ष्मी--भांजे को चिट्ठी लिख रही हूँ।

माँ—तुम तो एक शब्द भी नहीं जानतीं। लिख कैसे सकती हो ?

लक्ष्मी—भांजा पढ़ भी तो नहीं सकता।

❀ ❀ ❀ ❀

एक बूढ़ा बाप—बदमाश ! तेरे दिल में ज़रा भी दया नहीं है। मेरे लड़के को इतना मारकर गेंद माँगते हो। कहीं मर गया तो ?

एक खिलाड़ी लड़का—आपका लड़का मरेगा नहीं। यदि मर भी जावेगा तो क्या हर्ज है। आपके तो आधे दर्जन लड़के और हैं पर मेरे पास तो यही एक ही गेंद है।

❀ ❀ ❀ ❀

जज—मैं अभी फैसला सुनाता हूँ। कोई आदमी बीच में न बोले। बोलेगा तो बाहर निकलवा दूँगा।

अपराधी—तो मैं बोलता हूँ मुझे बाहर निकलवा दीजिए।

—जे० कृष्णमूर्ति।

नयी पहेलियां

(१)

दो अक्षर का मेरा नाम।
सिर पर चढ़ना मेरा काम॥

(२)

दो अक्षर का मेरा नाम।
सिर को मढ़ना मेरा काम॥

(३)

दो अक्षर का मेरा नाम।
सिर पर कढ़ना मेरा काम॥

(४)

दो अक्षर का मेरा नाम।
सिर पर बढ़ना मेरा काम॥

(५)

झाँसी, कुत्ता और कबूतर।
तीनों से लो ऐसा अक्षर॥
जो कि बतादें मेरा नाम।
बैठो और करो आराम॥

(६)

(पृष्ठ १५२ से आगे)

४ सिपाहियों के चले जाने पर अफ़सर ने बाकी सिपाहियों को इस तरह बैठा दिया कि गिनने में चारों ओर फिर ९ ही सिपाही रहे। परन्तु कुछ दिन बाद फिर ४ आदमी छुट्टी लेकर जाने लगे। अफ़सर ने चाहा कि वे रुक जावें पर वे रुकते नहीं थे। तब अफ़सर ने उन्हें भी छुट्टी दे दी और बाकी सिपाहियों को फिर इस प्रकार बैठा दिया कि गिनने में चारों ओर ९ ही ९ सिपाही थे।

३	३	३
३		३
३	३	३

बालको! बताओ तो इस बार उसने किस प्रकार बैठाया?

सूचना—ऊपर की ६ पहेलियों में से जिन बालकों के कमसे कम ४ उत्तर ठीक होंगे उनमें से तीन को इनाम दिया जाएगा। इनाम सिर्फ उन बालकों को ही दिया जाता है जो 'शिशु' के ग्राहक हैं।

जनवरी मास की पहेलियों के उत्तर

(१) लोटा, (२) छत्री, (३) लीलावती।

बालक-बालिकाओं के लिए

उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल-कवितावली

[ले०—ठाकुर श्रीनाथ सिंह]

इस पुस्तक में शिशुओं के पढ़ने योग्य ११२ शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक कविताएँ हैं। यह पुस्तक भी ऐसी है कि बच्चे इसको पाकर नहीं छोड़ते। बड़े प्रेम से बार बार पढते हैं। यहाँ तक कि पढ़ते पढ़ते इसकी कविताओं को रट डालते हैं। बालकों के लिये हिन्दी में अभी तक कोई भी पुस्तक ऐसी नहीं है। मूल्य केवल एक रुपया। 'शिशु' के ग्राहकों से बारह आना।

परियों का देश

[ले०—श्रीमती गोपाल देवी]

इस पुस्तक में परियों की २८ मनोरञ्जक कहानियाँ हैं। एक बार हाथ में लेकर बालक फिर इसे बिना खतम किये नहीं छोड़ते। बालकों में पढ़ने का शौक पैदा करने के लिए यह अपूर्व पुस्तक है। मूल्य एक रुपया। 'शिशु' के ग्राहकों से बारह आना। मँगाने का पता—

मैनेजर, शिशु' इलाहाबाद।

...क तथा प्रकाशक-पं० सुदर्शनाचार्य बी० ए० सुदर्शन प्रेस, प्रयाग